© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

महर्षि शुक्र द्वारा क्षत्रिय जाति का विवरण

डॉ० अवनीश कुमार
इतिहास विभाग,
बाबा साहेब भीमराव
अम्बेडकर बिहार
विश्वविद्यालय, मुज्फ्फपुर,भारत।

सारांश – विदेशों से आयी हुई जातियों प्राचीन क्षत्रियों से इस प्रकार घुल मिल गई कि उनको पहचानना कठीन हो गया। वे अन्य राजवंशों के तरह हिन्दू संस्कारों में पलने लगे। बल्कि यह कहना अत्युक्ति नहीं होगा कि ये नवीन राजपूतों ने हिन्दू धर्म तथा भारत की रक्षा के लिए अधिक तत्पर थे। इन राजपूतों ने ही हिन्दू धर्म और भारत की रक्षा के लिए सबसे अधिक उत्कर्ष किया।

मुख्यशब्द – महर्षि शुक्र, क्षत्रिय, जाति, हिन्दू, संस्कार, राजपूत, धर्म, विदेश, अभिलेख, संस्कृत, वर्णाश्रम।

शुक्रनीति में वर्णित सामाजिक व्यवस्था सुहद भौतिक आधारों पर स्थित थी समाज के भौतिक आधार के रूप में महर्षि शुक्र ने वर्णाश्रम वयवस्था को ही स्वीकार किया है।

आचार्य शुक्र ने क्षत्रिय जाति के बारे में भी विवरण दिया है इस काल मे क्षत्रिय जाति कई शाखाओं में बँटने लगी थी इसका कारण था कि प्राचीन क्षत्रिय वर्ग के सामानान्तर एक नई जाति का आर्विभाव हुआ जिसे राजदूत कहा जाता था। स्मृतिकारों ने जिसमें बृहस्पति इस वर्ग के लिए क्षत्रिय शब्द का प्रयोग किया है । परन्तु अभिलेखों में राजपूत कह कर सम्बोधित किया गया है। राजपूत का अर्थ है राजा का पुत्र इससे स्पष्ट है कि राजपुत लोग देश शासन व्यवस्था से सम्बोधित है। पूर्व मध्य युग में देश का शासन अधिकांश रूप में देश का शासन प्राचीन क्षत्रिय जाति के हाथ में था। लेकिन बहुत राजा थे जो ब्राह्मण थे क्षत्रिय नहीं थें। उन वंशों के लोग भी राजपूत कहे जाते होंगे। अतः यह आवश्यक नहीं था कि राजपूत लोग प्राचीन क्षत्रिय की सन्तान थे। इस काल में अनेक ऐसे राजवंशें की उत्पत्ति हुई जो अपने को राजपूत कहते थे। इस युग में यह भी प्रथा चली थी कि अपने वंश की प्राचीनता सिद्ध करने के लिये अपने कुल को चन्द्रमा तथा सूर्य से सम्बोधित करने लगे । रामायण तथा महाभारत के नायक सूर्य चन्द्रमा से सम्बोधित करने लगे। अपनी उच्चता सिद्ध करने के लिए कुछ राजपूत अपने का सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी कहते थे।

हिन्दू समाज में बाहर से आये गये जातिया वैक्ट्रीयन, ग्रीक, शक, पार्थियन आदि मिल गये थे। इन लोगों मे भी हिन्दुओं की धर्म व्यवस्था में स्थान मिलना आवश्यक था चूँकि ये जातियाँ लड़ाकू थी अतः इन्हें राजपूत कहा जाने लगा छठी–सातवीं सदी में भारत में हुण एवं गुर्जर प्रतिहार आये इन लोगों को भी राजपूतों की श्रेणी में रखा गया । सम्भवतः चालुक्य सोलंकी, परमार, चाहमान, तोमर, गढ़वाल आदि का मूल स्थान मध्य एशिया था। उन लोगों को भी

हिन्दू समाज में राजपूतों की श्रेणी में माना गया था। नाट लोग आजकल भी राजपूत नहीं माने जाते थे फिर भी उनका मूल स्थान सम्भवतः मध्य एशिया ही था। सफ नामक आधुनिक जाति का समिश्रण है इस जाति के लोग कृषक सैनिक थे। इस प्रकार जाति को हम देखते हैं कि क्षत्रिय समाज में राजपूत के उद्भव एवं विकास हुये। शुक्रचार्य ने जीविका निर्धारित करने के लिये क्षत्रिय में भी कर्म` सिद्धान्त का सहारा लिया है । जाति के बारे में अधिक रूढ़ीवादिता का परिचय नहीं दिया। वरण आचरण की श्रेष्ठता की ही जाति की श्रेष्ठता माना है । शुक्र ने जाति में इस तरह के नियम इसीलिए बनाये कि विदेशियों को आगमन भारत में हुआ था वे सभी क्षत्रिय जाति से अपने को सामंजस्य कराये विदेशों से आयी जातियां क्षत्रिय में इस प्रकार घुल मिल गये कि उसको पहचानना भी कठीन हो गया कि वे अन्य क्षत्रिय राजवंशों की तरह हिन्दु संस्कारों में पलने लगे। यह कहना गलत नहीं होगा कि वे नवीन राजपूत हिन्दू धर्म की रक्षा में अन्य हिन्दू जातियों से अधिक तत्पर रहते थे । इन राजपूतों ने ही हिन्दू धर्म और भारत की रक्षा के लिये सबसे अधिक उत्कर्ष दिया। केवल बंगाल तथा दक्षिण भारत में विदेशियों का प्रभाव नहीं था। वहां के मूल निवासी क्षत्रिय को शासक वर्ग में सम्मिलित थे। शेष लोग सूद्र की श्रेणी में ही थे। शुक्र नीति में वर्णित क्षत्रिय की सामाजिक व्यवस्था सुदृढ़ भौतिक आधारों पर स्थित थी। यही कारण है कि वाल्मीकि रामायण की भाँति शुक्र नीति में वर्णन प्राप्त नहीं होता फिर समाज के भौतिक आधार पर महर्षि शुक्र ने वर्णाश्रम व्यवस्था को ही स्वीकार किया है। सामाजिक व्यवहार के लिये विभिन्न नियमों का वर्णन भी वर्णित है। अतः शुक्रनीति सार ने चारों आश्रम का वर्ण उनके कर्तव्यों के साथ किया है। सभी जाति एवं वर्णाश्रम के व्यक्तियों को अपने कर्तव्य का पालन का आदेश दिया ।

आलोच्यकाल में विदेशों से आयी हुई ये जातियाँ भारतीय समाज में घुल मिल गई तथा राजपूत कहलायी। उन्होंने अपने आप को क्षत्रिय समाज से सम्बधित कराया। राजपूतों की उत्पत्ति का प्रश्न बहुत ही विवादास्पद है। इतिहासकारों से इस समस्या को सुलझाने के लिए पूर्व मध्य काल में ताम्र पत्रों एवं संस्कृत साहित्यों में राजपूतों को अनेक उपाधियों से विभूषित किया गया है । तथा उनकी उत्पत्ति किसी न किसी पौराणिक देवताओं ने किया है। अतः इन स्थिति में कुछ कहना कठिन हो गया है। कुछ राजपूत अपने को सूर्यवंशी मानते हैं तो कुछ अपने को अग्निकुल से सम्बन्धित मानते हैं । राजपूताना के कुछ स्थानों पर राजपूत शब्द का अर्थ क्षत्रियों अथवा जागीरदारों की अवैध संतान माना है।

टाउ महोदय ने राजपूतों की उत्पत्ति के विषय में यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया है कि राजपूत लोग शक अथवा सिंधियन लोगों की संतान हैं जो ईसा की छठी सदी में भारत आये थे । यूरोपियन विद्वान टाउ की राय का समर्थन करते हैं । डॉ• विन्सेट स्मिथ का अनुमान है कि राजपूत लोग शक, हूणो अथवा कुषाणों की संतान है जो ईसा पूर्व दूसरी अथवा पहली सदी में भरत आये थे। विलियम तथा डॉ• आर• भण्डारकर इसी मत के समर्थक हैं।

राय बहादुर गौरीशंकर, हीराचन्द्र औझा का मत सबसे भिन्न है। उनका कहना है कि पार राजपूतवंश परमार प्रतिहार, चाहमान और सौलंकी अथवा चालुक्य की उत्पत्ति अग्नि कुल से हुई थी । कहा जाता है कि वशिष्ठ ने दक्षिणी राजपूताना के आबू नामक स्थान पर यज्ञ किया था। वहाँ पर अग्नि कुण्ड से इन वंशों के मूल पुरूष उत्पन्न हुए जिन्होंने अलग–अलग राजवंशों की स्थापना की । डॉ• भण्डारकर आदि इतिहासकारों का कहना है हिक आबू नामक स्थान पर जो यज्ञ हुआ था उसका उद्देश्य हिन्दू धर्म के अन्तर्गत विदेशी जातियों को शुद्ध करके वर्ण व्यवस्था पूर्ण समाज में उचित स्थान प्राप्त करना था।

आबू के अग्नि कुण्ड से राजपूतों की उत्पत्ति की क्या रासों में वर्णित है रासों की तिथि निश्चित नहीं है और उसमें बहुत से दोष हैं। अतः इस कथा पर विश्वास करना कठिन है इससे केवल इतना ही मालूम होता है कि समाज में जिन लोगों की मान्यता अधिक थी उनकी उत्पत्ति की महानता स्थपित करने की चेष्टा की गई थी। राजपूतों को बौद्धिक क्षत्रियों की संतान मानना भ्रम है। प्राचीन क्षत्रिय भी विदेशों से आने वाली लोगो से मिल गये । ऐसे अनेक प्रमाण मिले है कि शुक्र भुखण्ड वंशों की कन्या ब्राह्मण तथा क्षत्रिय के साथ ब्याही गयी थी। डा• स्मिथ ने यह भी कहा था कि राजपूत जातियों गोर या आदि मूल निवासियों की संताने हैं। ऐसी धारणाओं के लिये प्रमाण का सर्वथा अभाव है ।

विदेशों से आयी हुई जातियों प्राचीन क्षत्रियों से इस प्रकार घुल मिल गई कि उनको पहचानना कठीन हो गया । वे अन्य राजवंशों के तरह हिन्दू संस्कारों में पलने लगे। बल्कि यह कहना अत्युक्ति नहीं होगा कि ये नवीन राजपूतों ने हिन्दू धर्म तथा भारत की रक्षा के लिए अधिक तत्पर थे। इन राजपूतों ने ही हिन्दू धर्म और भारत की रक्षा के लिए सबसे अधिक उत्कर्ष किया ।

सन्दर्भ ग्रंथ :–

1 मिथला शरण पाण्डेय – प्राचीन भारत की सामाजिक संस्थायें पृष्ठ – 152

2 रामशरण शर्मा – भारतीय सामन्तवाद पृष्ठ – 225

3 ए• पी• ग्रापिक हण्डिका भाग 14, पृष्ठ – 169

4 शुक्र 1, 38, 39

5 बाल्मिकी रामायण

6 मेघा तिथि 1, 136

7 राजतरँगिनी 4, 31

8 मत्स्य पुराण 11, 135